

४१०१ पु. १३८७

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४१०१ पु. १३८७ (पुस्तक)

ग्रंथ नाव राजवाडे चरित्रांशु.

विषय

कथा-पुराणे

श्री

॥ श्रीयताळ पचेवी स्त्री कथा ॥ तयाशुशुप वृश्चावरि ॥ त्रैत
॥ येक आसे अवधारि ॥ तेमो न्ये सिध उकरि ॥ आनोवेतुवा ॥
॥ १५ ॥ तेसावी रशेवानी घाला ॥ राण कुमी पातला ॥ वृश्चाव
॥ रिवळ गला ॥ तो जीला नाग कासा ॥ १६ ॥ त्रैत की लोम
॥ मीवरि ॥ तव वेताळ चनेरुला शरिरी ॥ मग त्रैत घेऊनी
॥ तस्यो देवरि ॥ नीधता जाला ॥ १७ ॥ तव स्रंजो येताळुः
॥ वी क्रमापरि येसी येक बोलु ॥ शस्त्र कथा की न काळु ॥ व्य
॥ र्वत्वा च जातसे ॥ १८ ॥ श्लोकः ॥ शास्त्रे कथा की नो देफ
॥ कळंग छे ती घीमती ॥ वेतीळ पच मुख वाक्य ॥ गळे
॥ ते काळे हेत की ॥ १९ ॥ आशास्त्र की न काळं कमीती ॥ तेफ

॥ सैशमूर्ख जानो वशीती ॥ रास्त्रे कचा आई कीती ॥ तसु नो वंते ॥
॥ तइतु धर्म परायणु ॥ रात्री जात से काया कीजे ॥ कथा सामपाग
॥ रुण ॥ संतोश रूप ॥ ३५ ॥ इतके अईको नीबो लने ॥ राजान बो
॥ लेची गहण पन ॥ वेताऊ कचा अप सदाने ॥ संगता जाला ॥
॥ ३६ ॥ श्री दोया वाराणसी नाम नारा ॥ तथे च तप मुगुठरा जाओ
॥ ३७ ॥ वज्र मुगुठ नाव कुमरा ॥ पचाण ॥ बुधी सांर ॥ ३८ ॥ यो दोया
॥ आती चती आवधा ॥ ऐसक देठो पैक आवसे रि ॥ पारधीगे
॥ लेझ उकति ॥ दोघे जने ॥ ३९ ॥ तव नारधी खेज तांते ये ॥ नृश
॥ कृत जाले बहूत ॥ तवं वृश्चा चामा दाळा ॥ सावंचीता ॥ देखी
॥ लाबूधी स्मार ॥ ४० ॥ बुधी सांर सणे वज्र मुगुठारी ॥ ये ये उं
॥ इकक आसैल परयेसी ॥ स्त्रनोणी नीघाला श्वरीसी ॥ तथा

॥ स्थापनाते ॥ ३६ ॥ पूठे देखीला सरोवर ॥ रातो मंजारी कमलीनी
 ॥ सार ॥ म्हायेंत आवेळी कती मनुसरा ॥ जावनी मोनी फुलला
 ॥ ३७ ॥ तेथे सतो शले दाघे जणे ॥ उदके केली भादो पा ॥
 ॥ तसे बेली तवे देखिले स्थापणे ॥ तेवि स्वराचे ॥ ३८ ॥ मंगल म-
 ॥ रकार केल ॥ दोघी जनी ॥ पूजा केली पूस्यवानि ॥ मंगल
 ॥ हिरवें पले येउनी ॥ पांढी सरोवर च्याये ॥ ३९ ॥ ब्रह्म सा-
 ॥ र्वादी पापंचे ॥ गोहार कीच्या सखा राकी ॥ सेकणें जा-
 ॥ नी पले ॥ सीध दसे पा मुचेंत ॥ ४० ॥ तथ ईतु का आव-
 ॥ स्वरि ॥ कळणये कीरा जे कमरि ॥ पुजा वयां गोरि ॥ तयारे
 ॥ आळी ससीयां सी ॥ ४१ ॥ सरोवराचिय पळी मयारी ॥ सेछो-
 ॥ से छपचारी पुजा येसी ॥ केली राजे कमरि ॥ ४२ ॥ सरो-

3

॥ वरिचीरच नापाकाता ॥ पुढाराजकुमरिदेखीली अवची
॥ ता ॥ तंव परस्पर उठली चीता ॥ तया वीक पूजाची ॥ ४२ ॥
॥ मग ती राजकुमरि ॥ समुख उभी राहिली आवधारि ॥ क
॥ मळकळिकाचे उमि करि ॥ दाविवु नाराजे कुमरि ॥ ४३ ॥
॥ अक्षम कळीका का नीला वीली ॥ मग दांता वरि देखीली ॥
॥ मग घाय्या वरि देखील ॥ सुखा परि दावीते ॥ ४४ ॥ ऐसे
॥ स्वस्नान करुनी ॥ राजकुमरि गेली नीघोनी ॥ तंव राजकु
॥ मरमुर्छी गत होउनी ॥ तो पळी लाते ये ॥ ४५ ॥ फुल आनाव
॥ या बुद्धि शास्त्र ॥ गेला होता तो आला वे हाउत रु ॥ तव वीराम
॥ लाराजकुमरु ॥ देखीला या ठे ॥ ४६ ॥ बुधी मारु हा पोतयां
॥ सी ॥ तुको वीचीता मस्त माणसी ॥ तंव येकरुणो च येसी ॥
॥ राजकुमरि चेनी वीयो ॥ ४७ ॥ ममवृतां तसा गीतला ॥ तर

जरि

38

॥ याचावीचारसांगवइला ॥ तोबधीद्वारप्रधानमला ॥ दा
॥ वीलावीचार ॥ ४० ॥ स्तणोवज्रमुगटाअईके ॥ कानीलावीली
॥ कमळकळीका ॥ तेनगरकळिकुज्वका ॥ ऐसेनावंतायाचें ॥
॥ ४१ ॥ दातीजेखुन ॥ तयेचापीताइतवटराज्याजाणे ॥ पुढे
॥ वतिमामपायाचीखुण ॥ नामतयाचेआसे ॥ ४० ॥ हृदया
॥ चीखुनऐसी ॥ मासोयामतासीऐसी ॥ तरिजाणेश्चरित
॥ सी ॥ एसेसागीतले ॥ ४१ ॥ सीपरिखोनीमातु ॥ तयान
॥ गीरानीघालेहरितु ॥ विदमालणीआघरिनीवांतु ॥ राहीले
॥ याघेराजामनी ॥ ४२ ॥ राजकुमरुमाळनीसीपूसे ॥ तुजराज
॥ कुमरिआघरिजाणेआसे ॥ तवदेस्तणोतआसेमोफुलने
॥ तआसे ॥ त्रतेदीनीसेजेकारणें ॥ ४३ ॥ फुलाचीयाजाळीये
॥ होलेमाळा ॥ त्रतेदीनीघालीगळा ॥ ऐसेआईकोनीनीनारि
॥ लीळा ॥ बुधीद्वारकरितसे ॥ ४४ ॥ मगस्तणोयमाळनीसी ॥

॥ जीजि सखी ये ॥ ६८ ॥ तेथुमी माळनी नीघाली ॥ बुघी सार
॥ पोली आली ॥ मग सावीतली ॥ आबघी बोली राजे कम
॥ राची ॥ ६९ ॥ मग कायसी धी जाले नीधारे ॥ वज्र मुगय
॥ सीजु धी शार ॥ सागीतले बर वनवी चारे ॥ बर वासीन
॥ धार करि ॥ ७० ॥ मग बज्र मगरे सर्व सुघर केला ॥ कापुरा
॥ सहीत वी उघेतला ॥ नचने लांज्यीला ॥ सर्वांगीते
॥ गोठा ॥ ७१ ॥ कस्तुरिज वादी करनी ॥ सर्वही परिमळेंद्र
॥ वेंचे उनी ॥ बुघी शार ॥ तज्जाला मागोनी ॥ मगनी चता
॥ जसहाला ॥ ७२ ॥ तथा सीसु जवीले कांती ॥ तुज पूसैल
॥ कोनी जाले संगती ॥ तरि ऐसे सोपावत याचती ॥ मज्ही
॥ सुगे कोही नाही ॥ ७३ ॥ ताबोल मानुनि नीघाला ॥ राज कम
॥ रिच्या मदिरो पातला ॥ तव तायने देखील ॥ सयासी माउये

॥ वरनीया ॥ ७४ ॥ तथा कोले वणायने ठाकीले ॥ तथा तुया सीवें
॥ सवीले ॥ को छोनी आनीले उपरि बवरी ॥ ७५ ॥ तसटीया लुनी
॥ आझ्यावनी ॥ मनोभावे वोवाळुनी ॥ मनसका वरि बैसुनी ॥
॥ वरणाश्रयने केले ॥ ७६ ॥ परस्पर परिभळें वृषसावीती ॥ येर
॥ येर मुरवीवी डीया घालिती ॥ आजी गण जुबने देती ॥ यंत्रि
॥ पूर्वक ॥ ७७ ॥ येसी जमी रववले लागली ॥ मग राजे कुमरि सु
॥ सती जाली ॥ तुझासी कोण कोणाले ऐसी बोलीली ॥ तसकुम
॥ गते पूसे ॥ ७८ ॥ तब येर र ॥ मज को न्ही नाली आ वधा
॥ रि ॥ तरि जमीली खन केसी अपरि ॥ जानी तला तुझी ॥ ७९ ॥
॥ तो झण येथे काय आव घाऊआ ॥ म्हाय जानी तल आपें ये
॥ ॥ तथाचे बोलने आशिकोनी कोसं ॥ संतो दाजाला ॥ ८० ॥
॥ दवक वने येको मने स्वरि ॥ मर मरे पलंग वरि ॥ दोष पडली

6

॥ हो ज्यारि ॥ संको मसुखंते ॥ ८५ ॥ तव मध्ये नरात्री नींद्राकर ॥
 ॥ राया च हाती सुदल आतुर ॥ नगरा माजी हा हाकार ॥ परव
 ॥ तलाते वा ॥ ८६ ॥ तवं राज वजिला राजे कुमर ॥ स्नो पो हा कव
 ॥ ठा जाला वी चार ॥ मगरा के मरि सांगे वी चार ॥ वज्र मुगय
 ॥ स्त्री ॥ ८७ ॥ स्नो पो हा राया राया रुजती ॥ सुद तं से मंध्या जे
 ॥ रात्री ॥ स्नो पो माजी मं नुहा मरि ॥ फल तीये वेजो ॥ ८८ ॥ राज
 ॥ कुमरि ने स्नो ॥ माळ चा उरि जाय सुणे ॥ तवं ते स्नो तेथी
 ॥ ले जीता काई स्त्री ॥ ८९ ॥ तव तो स्नो ना रिसे ॥ धा कुंटे प
 ॥ नी चामई च आसे ॥ सूर्य कला जानत आसे ॥ आव जतण
 ॥ नव्हा वीतया ॥ ९० ॥ तवं ते स्नो कांतां आपणा सु ॥ स्न आ
 ॥ सतां मै चासी ॥ स्नो हो ले आसे आपना सी ॥ दुरव हे कथाः
 ॥ आधीत की ॥ ९१ ॥ स्नो मै च आसतां याते ॥ हा ठा को गे आ

५

५

॥ पनीयाते ॥ १०८ ॥ मेरासी मग कत आदरिले मेराते ॥ की
॥ सेसं चार ॥ १०९ ॥ कुबुधी कत नीमानसी ॥ स्त्रोणो हा पा हा ठार
॥ न्यामेरासी ॥ दोनो ताटे मरनी सरवीया सी ॥ सूर्य खुनसा
॥ गीतली ॥ ११० ॥ जमाते राजे कुमर आला ॥ मागील हा सी
॥ चावता तसांगी मला ॥ तो हा मराचा तुवासांगी तला ॥ वा
॥ यावीण तुवा ॥ १११ ॥ तवा मराचा राज कुमर ॥ दुज आंजपा
॥ हवीला पा हा ठार ॥ चारवी राजे कराचा पा हा ठार ॥ दोघेज
॥ ठेत तर ॥ ११२ ॥ तवा मराचा राजा टेचे उनी ॥ आली या दो
॥ घीजनी ॥ येकता टराजे पूत्रा पुंछे उनी ॥ दुज बुधी ॥
॥ रापुंछे ॥ ११३ ॥ युधी सारे आणता टीचे काहे ॥ घाटे
॥ स्थाना सी घातले ॥ ह्मण नलागता पातले ॥ मयां तो
॥ नतो ॥ ११४ ॥ मग सनी तले वज्र मग यासी ॥ तुज कवी लिंसा

॥ यासी ॥ मे च नादि असस्तासी ॥ सना वतु वां ॥ ९४ ॥ मग परि
॥ च्या रि का पाठ उनी ॥ बु थी सारा बी चार करिल मनी ॥ राजे
॥ पूत्रा ते पी स्वा उनी ॥ पाठ वी ला या स ॥ ९५ ॥ स्तोत्रा राज कम
॥ रि नी द्रा इ ले भर ॥ हा ति ची का कणे का रा वी थी र ॥ इ श्री रा
॥ द क पाल वं का पुरि ॥ रि सु का का रं रु रि ण इ व रा वी ॥ ९६ ॥
॥ मी जा इ ने स स ना सी ॥ जे रा गी रा ये तं प थ रि ण प्र ये सी ॥
॥ ते ये तु वां या वं या वं म न पा सी ॥ रि तु के क र नी या ॥ ९७ ॥
॥ म ग स वी ते ण नी द्रा के ली ॥ व र धी सारा ची सी क व ठा के
॥ ली ॥ म ग दो थी जे गी या थी रं प थ रि ली ॥ स म सां नी वें सु
॥ ले ॥ ९८ ॥ स्तोत्रा जी प उ ले खान ॥ कां के ण ने ली का उ नं ॥
॥ त व रा यं बी दी या घ र नी ॥ जा उ घे वं वी ला ॥ ९९ ॥ त वा च
॥ भा त जी ली या व रि ॥ जा गी जाली राज कम रि ॥ ते द स्वा नी
॥ बी च परि ॥ रा या सी सां गी त ले ॥ १०० ॥ वा वी पाल पाल व स उ

॥ जाकी ॥ मग बुधी दारे बुधी केकी ॥ राजमी त्राकरिका कणेरी
॥ घळी ॥ की कावया पांय वीली पागरा माजी ॥ १ ॥ बुधी दारे
॥ तया ते स्त्रोणे ॥ लोक स्त्रोणातीतु वांचो रली कांकणे ॥ तरतया
॥ तस्त्रोणा वें मीनेणे ॥ मासीया गुरसी पुसो ॥ २ ॥ मग कांक
॥ ने घेउनी नगरा तेजाल ॥ साये की कावया वेंसला ॥ तं
॥ बंलो की मीळो नी धरिला ॥ जो रस्त्रु नीया ॥ ३ ॥ तं वेंस
॥ स्त्रोणे मजन कांधर ॥ समसानी तप करित आसे माझा गुर ॥
॥ तया सी पुसा वाचकार ॥ मी कांसे जाणे हे ॥ ४ ॥ मग समस्त
॥ लोक मीळो नी ॥ जाले जोगीया पोसी समदानी ॥ तं वेंस
॥ कीला उनी ॥ ध्यानी वेंसला आसे ॥ ५ ॥ मग घर नीतया
॥ सी ॥ नेले दंत घट राया पासी ॥ राच पूसीले जोगीया
॥ सी ॥ कांक नें चोरिली तुवी ॥ ६ ॥ जोगी स्त्रोणे रायास

8

॥ मसानी ॥ मीवें सलो होतो ध्यानी ॥ तव माई येक
॥ नगरा आतुनी ॥ जाली तेथे ॥ ७ ॥ चेत घातले
॥ हो ते शरणावरि ॥ तेचो पुन काडीले बाहेरि ॥ स्वा
॥ कोलामली आवधारि ॥ तये स्थानी ॥ ८ ॥ तेचे
॥ ली ते आस्ती घरिली ॥ तयेची कांकने काठीली ॥ ९ ॥
॥ उरावरि त्रीसुलहाने तली ॥ पळतं पळता ॥ १० ॥ ने
॥ सली होती श्रीरोदक दाला ॥ तो पालव कांपो नीघेत
॥ ला ॥ ऐसा वृता तसांगी तला ॥ साने राया पासि ॥ ११ ॥
॥ तरि गोष्टी मना आनावी ॥ कवणे माई वोळखावी ॥
॥ नगरा बाहीर दालावी ॥ पाहे तुकांकनवी कवीली ॥ १२ ॥

॥ ऐसी आई कुनीयां माते ॥ राजासाला वी स्मीत ॥ मी पाठवी
 ॥ लेत नुण पाहा वयां धरित ॥ तव आवाचे सांच ॥ ११ ॥
 ॥ लोकी सांगीत लेबोलने ॥ तवारावो जोगीयां सीसं
 ॥ जे ॥ ऐसी स्त्री येसी काय करणे ॥ ते सांचाचे स्वामीः
 ॥ १२ ॥ तंव जोगी सांगी वी चार ॥ ब्राह्मण माई त्रीअ
 ॥ नीगुरु ॥ आलाक वी स्वामी आनी मोनु ॥ याचे वचे
 ॥ नऊ की जे ॥ १३ ॥ मीतराज कन्या आनी ली ॥ साने
 ॥ जोगीयां सीस मर्मिली ॥ मंगति येणे सनु हार ॥ जा
 ॥ चुनिनी बोनी फुल सोड ॥ १४ ॥ तव दतराया सीची ताप
 ॥ उली ॥ राजे स्नेहोती रायाची कन्या लाव जाली ॥ स्नेहोनी दो
 ॥ घे आजी प्रवेसली ॥ संगी स्त्री आणी पुत हो ॥ १५ ॥ ऐसी क
 ॥ सांगी मोनी की कमासी ॥ वेताल स्नेहो घापात कक वनासी ॥

(१)

॥ जानोनीजरिनसंगसी ॥ तरि पावसीपंचलोत ॥ १७ ॥ तबकी
॥ कामसुखोआईक ॥ दंतघटरायासीघउलेपातक ॥ परिशीण
॥ करिचीसुनौनीदुखा ॥ तेपावलोतणे ॥ १८ ॥ श्लोक ॥ आपरो
॥ इतीतणकर्तव्यः कर्तव्यसुपरिश्रिता ॥ पाश्यातीश्वरीसंतापः
॥ ब्राह्मणोनकुर्वेमावेतुयया ॥ यापरियेताळाचती ॥ कथाकी
॥ कामासुखोवीपती ॥ तेपरिसुखीप्रोतीआवघाणदेउनी ॥ १९ ॥
॥ अंसिसमीतावीक्रमोवेतकरोताउउन ॥ तवावीक्रमधाउन ॥
॥ तयासीसुखावरिचेतला ॥ २० ॥ इतीकथासमाप्तसंपूर्ण ॥ १५ ॥

१

॥ अना ॥

१

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ पुन्हा वेताळ स्वणो वीक्रमासी ॥ कथा सांगतो
 ॥ परिघेसी ॥ तुवं श्रवणें शवीमो न्यासी ॥ रायान्यतुरानने ॥ ५ ॥ आ
 ॥ रिणावीतनामनगरि ॥ तेथे वीकृष्णामी ब्राह्मण आवधारि ॥ तवं
 ॥ याची रक्करिनी नाव श्राने स्वारि ॥ तथा सीपूवनाही ॥ १॥ तेणे पुत्राची
 ॥ या आसा ॥ पाळीले येक मुंगरा ॥ जयाची करिता श्रश ॥ गर्भसंभ
 ॥ जला ॥ ३ ॥ मग नवमास जावली या वरि ॥ पूत्र जावला तदा सुदरि ॥
 ॥ तो पुर्णचंद्राकलाची या प ॥ बाजेला गला ॥ ४ ॥ ऐसे कवें देये
 ॥ केदीवसी ॥ न्हा नुनी पाळ पा निज वीले बाळ कासी ॥ आपनो
 ॥ ली उदकासी ॥ राखे नें देव ले मुंगरा ॥ ५ ॥ तचा पाळनी या वरि स
 ॥ पडिला ॥ तो मुंगरा यने देखील ॥ मग वीदा रनी पाडीला ॥ पाव
 ॥ नीया खाली ॥ ६ ॥ हारि खें स्वामी नीसी सांगे गेला ॥ तवं तथाच तो
 ॥ उी रगतं देखील ॥ हा हा याणे बाळ कमारिला ॥ स्वणे नीधंगर
 ॥ या कीलीत या वरि ॥ ७ ॥ तवं ते पाय सांगुनी ॥ मत्त पावला तक्षनी ॥

॥ आपन रउत पोठ घे उनी ॥ व्यावोनी आली घरा ॥ ८ ॥ पाळ नापा
॥ हेतवनी म्हीत ॥ बाळकनी जेले आसे आनंद भरित ॥ मंगल गुण
(10) ॥ म्या पापनी पावन की चारित ॥ हाया केली मुंगल मारिला ॥ ९ ॥
॥ ऐसी कथा सुंदरि ॥ सांची तली वीकमा केशरि ॥ उतर सांग आ
॥ वधारि ॥ ते वात्रे गेले वृक्षावरिवळन लागता ॥ १० ॥ इती वेता
॥ पंचे वीसी कथा ऐसी वरासी वीरचीता ॥ पनावनी केली क
॥ ध्या ॥ समाप्त जाली येथुनी ॥ ११ ॥ श्री गुरु प्रसन घाम आधा ॥ ९

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ आतां वेताल कथासंगोपहिकर ॥ आती धर्मिया
॥ नामनगर ॥ तेथे गुन जो राजाच्यतुर ॥ तेथे राजे करितसे ॥ १ ॥ तेथे के
॥ शिवस्वामी ब्राह्मण ॥ तयासी आमरावती कन्यासून ॥ वीच्यासा
॥ त्यासं जाली गंडन ॥ सर्व कलाजानती ॥ २ ॥ तेवरा यो मयजालीर
॥ मनी ॥ तयासी पाहीले मनी ॥



11

॥ श्रीमहेशाय नमः ॥ दशम उकरि सागो मज ॥ ६७ ॥ सांख्ये ॥ अणवक्या ॥
॥ आइकंदरा येका चेना मनगर ॥ तेथे धनदतना मेघोर ॥ न्याव्हाराहो
॥ तां ॥ ६८ ॥ सांख्ये कन्याला वण सुदरा ॥ तेने श्रेय प्रनीली सुदरा ॥ सुख
॥ आसता बीचारा ॥ तया चापी तो आपला ॥ ६९ ॥ तेने धण श्रेय काये
॥ केले ॥ सब धण जुत रेवो निरी वीले ॥ मंगसा सरया आगां बीसी वीले ॥
॥ रघी येते तया सी ॥ ७० ॥ तेव्हा तया सीले निलगडी दीधली ॥ आपली येक
॥ न्येसी आळकार लेवीली ॥ कुठला मंगपाट वीली ॥ दोघे तीये चीयान
॥ मरा ॥ ७१ ॥ मार्ग येतां तेण ॥ पणकार भुशण ॥ घेउनी पळाला येणो ॥
॥ देखांतरा सी ॥ ७२ ॥ मंगते मंगोती आली माहेरि ॥ स्त्रो आस्नावरिधा
॥ तले चोरि ॥ पति धननेलां ऐसी परि ॥ जाली मज ॥ ७३ ॥ ऐस मातां पी
॥ तया प्रती सांगी तले ॥ तेथे रतया सी दुरवजाले ॥ ऐसे तया पतीले
॥ पवीले ॥ करण तयाचे ॥ ७४ ॥ तो देश देसी ही उनी ॥ मामुतां आला
॥ तयेथानी ॥ मंगसंतो सली मनी देखोनी ॥ नष्टमस्यस्त ॥ ७५ ॥ वा

12

५५
त

॥ जीवा यो लोकां नो सुखं कायं पाशाण वासे च मारि पुरा तया
॥ नावे ॥ आतरे बहुतारे ॥ ७५ ॥ मंग यु ज मनि बोलीला ॥ तुहे
॥ कयाची ये बोला ॥ आवधारिते तु जान झला ॥ ऐक सु दरि सगे
॥ अतु जे ॥ ७६ ॥ सु दानं न कल जी के बो लने ॥ नी रते जे से ची वते
॥ ७७ ॥ के आशी आई क साव धाण ॥ कयाय की जान पा ॥ ७८ ॥
॥ कचे ना पुरे ना मन गह ॥ ते य स मु द द ता वानी या धार ॥ सी व देत
॥ वानी ये ना धा कु मर ॥ सर्व व का ज पा ता ॥ ७९ ॥ तया ची क
॥ गरी आ नो क ॥ ची की के मने आर आर क ॥ तया दो धा सो री क
॥ जाली वर ते ये ॥ ८० ॥ तया ची क न्या सर वी नि जाणा ॥ ते सी व दे
॥ तं ज नी ली आ धार ॥ मा रु रि आ स तो ती ये चे वर ॥ गु ण उ म दो
॥ लग ले ॥ ८१ ॥ ऐ सा क व ने ये के अ न्व श्य रि ॥ बै स ला आ स उ
॥ प रि व रि ॥ त व मा गी जा ती या पू र सा व रि ॥ क ल्प ना के ली ॥ ८२ ॥
॥ आ ग ले ग रु खि पा ट बि ली ॥ ती ने त या सी बो ली वी न आ नी ली ॥

५५



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com